"Social Mobilty is an Expression of Social Change"

"सामाजिक गतिषीलता सामाजिक परिवर्तन की ही एक अभिव्यक्ति है"

Researcher
Mrs. Aparna Ariel
Librarian

सार – जब सामाजिक संरचना (Social Structure) में या सामाजिक संबंधों के प्रतिमान में कोई हेर फेर होता है, तो उस स्थिति को सामाजिक परिर्वतन कहते है, पर जब उसी सामाजिक संरचना की किसी इकाई की स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन होता है तो उसे सामाजिक गतिषीलता कहा जाता है। उदाहरण के रुप में सामाजिक जीवन में व्यावहारिक तौर पर हम यह देखते है कि कितने ही व्यक्ति एक पेषे को छोड़कर दूसरे पेषे को, एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को अथवा एक वर्ग की सदस्यता को छोड़कर, दूसरे वर्ग की सदस्यता को स्वीकार कर लेते है। एक व्यक्ति आज क्लर्क है, पर अपने प्रयासों के फलस्वरुप वह पढ़ लिख कर कल प्रोफेसर अथवा IAS अफसर बन सकता है, जो कल तक कोलकाता में रह रहा था, वह आज कानपुर में आकर बस जाता है। ये सभी सामाजिक गतिषीलता के उदाहरण है और सामाजिक जीवन के एक व्यावहारिक व चलायमान पक्ष का प्रतिनिधित्व करते है। इसलिये यह कहा जाता है। कि सामाजिक गतिषीलता का तत्व प्रत्येक समाज में होता है फर्क केवल इतना ही है कि प्राचीन, आदिकालीन या परम्परागत समाजों में सामाजिक गतिषीलता अत्याधिक कम होती है। जबकि आधुनिक समाजों में सामाजिक गतिषीलता अधिक उग्र, स्पष्ट व तेज़ होती है।

प्रस्तावना – सदैव से ही मानव समानता का पक्षपाती रहा है उसका यह आदर्ष रहा है कि मानव एक ही परमात्मा की उपज है अतः क्यों मनुष्य मनुष्य में भेद किया जाये। **व्यक्तियों, परिवारों या अन्य श्रेणी के लोगों का समाज एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जाने को सामाजिक गतिषीलता कहते है**। इस गति के परिणामस्वरुप उस समाज में उस व्यक्ति या परिवार में

दूसरों के सापेक्ष सामाजिक स्थिति बदल जाती है। सामाजिक गतिषीलता से अभिप्राय व्यक्ति का एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने से होता है जब एक स्थान से व्यक्ति दूसरे स्थान को जाता है तो उसे हम आम बोलचाल की भाषा में **गतिषील होने की क्रिया** मानते है। गतिषीलता से तात्पर्य एक सामाजिक व्यवस्था में एक स्थिति से दूसरी स्थिति को पा लेने से है। जिसके फलस्वरुप स्तरीकृत सामाजिक व्यवस्था में गतिषील व्यक्ति का स्थान ऊंचा उठता है व नीचे चला जाता है। एक स्थान से ऊपर उठ कर दूसरे स्थान को प्राप्त कर लेना जो उस से ऊंचा है निसंदेष गतिषीलता है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक गतिषीलता का अभिप्राय है **किसी व्यक्ति, समूह या श्रेणी की प्रतिष्ठा में परिवर्तन।**

उद्देष्य –

(1) सामाजिक गतिषीलता एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो हर समाज में पाई जाती है किसी में कम अथवा किसी में ज्यादा।

(2) सामाजिक गतिषीलता सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन दर्षाती है सामाजिक गतिषीलता एक जटिल प्रघटना भी है क्योंकि इसमें दिषा, समय और संदर्भ तीनों के ही तत्व निहित है दिषा की दृष्टि से गतिषीलता ऊपर की ओर नीचे की ओर या समानान्तर हो सकती है।

(3) परिवर्तन समाज में व्यक्ति एवं समूह दोनों अथवा दोनों में से किसी एक की प्रस्थिति में हो सकता है।

(4) सामाजिक गतिषीलता के दो पहलू है – वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ

(5) सामाजिक गतिषीलता का माप कठिन है। क्योंकि इसमें तुलनात्मक विधि का प्रयोग हो सकता है।

(6) सामाजिक गतिषीलता व्यक्तियों या समूहों के निजी प्रयासों पर आधारित नहीं अर्थात् यह सामाजिक संरचना का ही फल है।

प्रकार – सामाजिक गतिषीलता के दो प्रकार है

(1) क्षैतिज सामाजिक गतिषीलता

(2) उदग्र सामाजिक गतिषीलता

क्षैतिज सामाजिक गतिषीलता – यह वह गतिषीलता है जिसमें कि एक व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का एक ही स्तर में स्थित एक समूह से दूसरे समूह में स्थानान्तरण होता है। इस प्रकार की सामाजिक गतिषीलता में मुख्य बात यह होती है की इसमें एक व्यक्ति या

सामाजिक वस्तु की सामाजिक स्थिति में उदग्र दिषा में बिना कोई उल्लेखनीय परिवर्तन हुए ही उस व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का स्थानान्तरण होता है, अर्थात् एक व्यक्ति या वस्तु का समान स्तर वाले समूहों या स्थानों में स्थानान्तरण होना ही क्षैतिज सामाजिक गतिषीलता है।

उदग्र सामाजिक गतिषीलता – इस प्रकार की गतिषीलता ने सामाजिक वस्तु का स्थानान्तरण एक सामाजिक स्तर से अन्य सामाजिक स्तर को होता है। उदाणार्थ यदि एक व्यक्ति का स्थानान्तरण लॉटरी जीत जाने के कारण निम्न आर्थिक वर्ग से उच्च आर्थिक वर्ग में हो जाता है अथवा कोई फैषन उच्च वर्ग से निम्न वर्ग में चला जाता है तो उसे उदग्र सामाजिक गतिषीलता कहेंगे।

उपयोगिता – सामाजिक गतिषीलता के अध्ययन में जाति तथा वर्ग से संबंधित पदों में परिवर्तन का अध्ययन किया है भारतीय संदर्भ में श्री एम.एन. श्रीनिवास ने जाति में गतिषीलता का सांस्कृतिकरण की अवधारणा के विषय विस्तार से अध्ययन किया है उनका ये मानना था कि जाति में सामाजिक स्थितियॉ सभी की जन्म से निर्धारित होती है जो स्थाई होती है परंतु प्रतिष्ठात्मक उपागम के आधार पर कई निम्न जाति के लोग अपनी स्थिति को ऊपर उठाने के लिये कई तरीकों का इस्तेमाल करते है। ताकि वे उच्च जाति के समकक्ष आ सकें। इस प्रकार अपनी स्थिति को ऊपर उठाने की कोषिष अकसर निम्न जाति के लोगों में पाई जाती है। सांस्कृतिकरण के माध्यम से जाति के स्थान में कोई लम्बवत गतिषीलता नहीं आती है बल्कि निम्न जाति को ऐसा लगता है कि उनकी प्रतिष्ठा में बदलाव आया है और संभवतः इसलिये अपनी प्रतिष्ठा में बदलाव लाने के विचार से अधिकांष निम्न जाति के लोग ही अपने व्यवहार में इस प्रकार का परिवर्तन लाने की कोषिष में लगे रहते है।

शोध विधि – शोध हेतु चयन किया गया प्रत्येक विषय अत्यन्त महत्पूर्ण होता है। अतः शोधकार्य को प्रारंभ करने से लेकर पूर्ण करने तक अत्यन्त सावधानी रखना आवष्यक है। शोधकार्य की सफलता उपयोगी विधि पर निर्भर करती है यदपि यह शोधकार्य के प्रकार पर भी निर्भर करती है। शोधकर्त्ता द्वारा शोध हेतु चुने गये विषय सामाजिक गतिषीलता का अध्ययन दमोह जिले के पथरिया एवं हटा ग्राम के संदर्भ के लिये सर्वेक्षण विधि सर्वथा उपयुक्त मानी गई है।

अतः शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि के रुप में अपनाया गया है। इस विधि के माध्यम से लोगों का साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त होता है एवं इस विधि द्वारा प्राप्त परिणाम अन्य विधियों की अपेक्षा विष्वसनीय माने गये। इस विधि में साक्षात्कार देने वाले एवं साक्षात्कार लेने वाले एक दूसरे से प्रत्यक्ष संवाद करते है। अतः शोध की विष्वसनीयता अधिकतम् होती है।

शोध उपकरण – शोधकर्ता द्वारा जिन अनुसूचियों का शोध कार्य में प्रयोग किया गया वे निम्न है–

साक्षात्कार प्रष्नावली

(1) प्रदत्तों का संग्रहण सरतला से करने के लिये साक्षात्कार प्रष्नावली का निर्माण किया गया।

(2) प्रष्नों की भाषा सरल एवं स्पष्ट रखी गई जिसे आसानी से समझा जा सके।

(3) शोधकर्त्ता द्वारा आसान एवं छोटे–छोटे प्रष्नों का निर्माण किया गया।

शोध कार्य हेतु अध्ययन क्षेत्र के संग्रहण में दमोह जिले के कुल दो ग्राम लिये गये है जिससे शोधकर्त्ता द्वारा प्रष्नावली तैयार की गई, जिसे साक्षात्कार द्वारा भरा गया है।

परिणाम – प्रस्तुत शोध अध्ययन दमोह जिले के दो ग्राम पथरिया एवं हटा में अध्ययन का केन्द्र था अध्ययन का उद्देष्य यही था कि हम व्यक्ति की सामाजिक गतिषीलता के विषय का अध्ययन करें। प्राप्त परिणामों के विष्लेषण से जो निष्कर्ष सामने आये है उन्हें निम्नानुसार दर्षाया गया है।

(1) साक्षात्कारकर्त्ता के प्रति लोगों का सकारात्मक दृष्टिकोण रहा इस अभिवृत्ति का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ है कि उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक है।

(2) जिन ग्रामों के लोगों का साक्षात्कार किया गया वहां साक्षात्कारकर्त्ता एवं व्यक्तियों के बीच अभिवृत्ति कुछ नकारात्मक एवं कुछ सकारात्मक रही।

न्यादर्ष का वितरण –

(1) पिछले 50 साल में गतिषीलता के दर में ज्यादा वृद्धि हुई है

(2) मजदूर वर्ग की स्थिति में मध्यम तथा उच्च स्थिति में काफी परिवर्तन आया है।

(3) उच्च स्थान तथा मध्यम स्तर पर गतिषीलता में ज्यादा लचीलापन देखने में आया है।

निष्कर्ष – क्योंकि सामाजिक संरचना ही व्यक्ति को ऐसे अवसर प्रदान कर सकती है जहां गतिषीलता हो सकती है, एक पिछड़े हुए समाज में व्यवसाय के अवसर कम होते है अपेक्षाकृत एक उन्नत और औद्योगिक समाज में कितने नित नये व्यवसाय या नौकरी के क्षेत्र पैदा होते जाते है। सामाजिक गतिषीलता राजनीति से भी संबंधित है एक जनतान्त्रिक समाज में आषा

की जाती है कि सामाजिक गतिषीलता के अवसर बिना भेदभाव के सभी को प्राप्त हो सकेंगे। वास्तव में सत्यता तो यह है कि यद्पि व्यक्ति समाज से अभिन्न रुप में जुड़ा हुआ है और अनेक पीढ़ियों के अनुभवों से लाभ उठाता है फिर भी समाज के प्रति उसका अपना भी कुछ अनुदान होता है वह समाज के द्वारा अपनी क्रियाओं को निर्देषित तथा संचालित करता है। वह स्वयं अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेता है वास्तव में सामाजिक गतिषीलता वह है जो कि अपने सुस्पष्ट रुप में आधुनिक समाजों की एक विषेषता बन जाती है।

संदर्भ –

समाजषास्त्र – रवीन्द्रनाथ मुखर्जी तथा भरत अग्रवाल

समाजषास्त्र का अध्ययन – जी. के. अग्रवाल

भारतीय समाज – एम.एल. गुप्ता/डॉ. डी.डी. शर्मा

समाजषास्त्र एक परिचय – हिरेन्द्र प्रताप सिंह/नवीन कुमार